खेल के माध्यम से सहमति पर बातचीत

शिल्पा बजाज

लैंगिकता मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। आमतौर पर, बच्चों में यौन-भावना से सम्बन्धित एकदम शुरुआती धारणाएँ बिलकुल प्रारम्भिक बचपन में ही बन जाती हैं, उनके बोलना शुरू करने से भी पहले। यौन विकास के कई चरण महत्त्वपूर्ण हैं जैसे कि वे चरण जब छोटे बच्चे अपने माता-पिता और अपने आसपास के अन्य वयस्कों की उपस्थिति देखते हैं, जब उन्हें शौचालय का प्रयोग करना सिखाया जा रहा होता है और जब उन्हें अपने जननांगों का पता चलता है और वे उनमें दिलचस्पी दिखाते हैं। इस दिलचस्पी के प्रति बच्चों के माता-पिता/ अभिभावकों का रवैया और दृष्टिकोण बच्चों के मनोलैंगिक विकास का मार्गदर्शन करता है। जैसे-जैसे बच्चे विकसित होते जाते हैं और उनकी जिज्ञासा बढ़ती जाती है, वे यौन-भावना, प्रजनन और जन्म से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्न पूछते हैं। तीव्र वृद्धि और विकास के इस चरण के दौरान बच्चे अपने शरीर के बारे में अनुभव करते हैं और सीखते हैं। वे लैंगिक भूमिकाओं का अवलोकन करते हैं और आत्म-पहचान का निर्माण करते हैं।

हो सकता है कि हममें से कुछ लोग यह मानते हों कि यौन-भावना से सम्बन्धित बातों पर चर्चा करने से बच्चे अपनी 'मासूमियत' खो बैठेंगे। हम सबके लिए लैंगिक जागरूकता महत्त्वपूर्ण है; हमारे लिए भी और हमारे बच्चों के लिए भी। यह उनके निर्दोष दिमाग को भ्रष्ट नहीं करेगा बल्कि उन्हें शारीरिक और मानसिक ख़तरों से बचाएगा। जिस तरीक़े से हम बच्चों के सवालों का जवाब देते हैं, वह लैंगिकता के प्रति उनके नज़रियों को विकसित करने में योगदान देता है। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि उनकी जिज्ञासाओं को रचनात्मक रूप से और आयु-उपयुक्त तरीक़े से सम्बोधित किया जाए।

सहमति और ख़ुद अपने निर्णय करने की क्षमता से जुड़ी अवधारणाएँ

औपचारिक स्कूली शिक्षा की शुरुआत से ही व्यापक रूप से ऐसी यौन शिक्षा देनी चाहिए जो वैज्ञानिक रूप से सटीक, ग़ैर-निर्णयात्मक, आयु-उपयुक्त और यौन मामलों पर पूरी जानकारी देनी वाली हो। जब बच्चे लैंगिकता के संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, अन्तःक्रियात्मक और शारीरिक पहलुओं के बारे में सीखते हैं तो वे जानकारियों, कौशलों और सकारात्मक मूल्यों से लैस हो जाते हैं जिनकी मदद से वे सुरक्षित व सन्तोषप्रद सम्बन्ध बनाने में सक्षम हो पाते हैं। जब बच्चे रिश्तों में समानता और सम्मान के बारे में सीखते हैं तो वे अनुचित व्यवहार करने वाले व्यक्तियों और स्थितियों को पहचानने में सक्षम होते हैं, जिससे उनके लिए अपनी और दूसरों की भलाई का ध्यान रखना आसान हो जाता है।

सुरक्षित और सम्मानजनक सम्बन्ध बनाने में, सहमति का होना बेहद महत्त्वपूर्ण बात है। सहमति की अवधारणा में हम एक-दूसरे की सीमाओं का सम्मान करते हैं, अपनी और दूसरों की सुरक्षा और गरिमा का ध्यान रखते हैं और इस प्रकार शारीरिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ सम्बन्ध बनाते हैं। छोटे बच्चों को सहमति के बारे में पढ़ाना न केवल उन्हें ग़लत लोगों से बचाता है बल्कि उनके बाद के जीवन में भावनात्मक और शारीरिक रूप से सुरक्षित सम्बन्धों की नींव भी रखता है। यह बच्चों के बीच स्वस्थ आपसी सम्बन्धों को बढ़ावा देकर कक्षा में सीखने का सुरक्षित माहौल भी सुनिश्चित करता है। वे शरीर, शारीरिक दूरी बनाए रखने, स्पर्श और सीमाओं की मूल अवधारणा सीखते हैं। वे अपनी और दूसरों की भावनाओं को बेहतर ढंग से समझते हैं और इससे उन्हें ऐसे कौशल प्राप्त होते हैं जिनकी मदद से वे आयु-उपयुक्त मुद्दों के बारे में निर्णय लेने की अपनी क्षमता को माँज सकते हैं।

शिक्षक, बच्चों के जीवन में सीखने के इन अनुभवों के महत्त्व को समझते हैं और प्रायः उन तरीक़ों के बारे में सोचते हैं जिनसे बच्चों के लिए इन मूल्यों को सीखने और अभ्यास करने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया जा सके। लोकतांत्रिक वातावरण में दी जाने वाली खेल और गतिविधि-आधारित शिक्षा छोटे बच्चों को इन विचारों से परिचित कराने का सबसे अच्छा तरीक़ा हो सकती है। नीचे कुछ गतिविधियाँ दी जा रही हैं जो बच्चों को सुरक्षा और ख़ुद निर्णय करने की क्षमता से जुड़ी अवधारणा को मज़ेदार तरीक़े से सीखने में मदद करती हैं। शिक्षक सीखने के विभिन्न उद्देश्यों वाली ऐसी ही कई अन्य गतिविधियाँ तैयार कर सकते हैं जो छोटे बच्चों को यौन शिक्षा देने के लिए उपयुक्त हों।

गतिविधि : सुरक्षा बुलबुला

पहला दिन : कहानी

विद्यार्थियों को एक बड़े घेरे में 'अपने मन मुताबिक़ चलने' के



लिए कहें। तीन मिनट के बाद उन्हें वापस आकर बैठने के लिए कहें। अब उनके साथ इस गतिविधि के अनुभव की चर्चा करते हुए, इसके दौरान आने वाली कठिनाइयों पर चर्चा करें। उनसे पूछें कि अपने मन मुताबिक़ चलने की गतिविधि के दौरान उनके मन में क्या विचार आ रहे थे; क्या उन्हें अपने सहपाठियों के बिलकुल क़रीब पहुँचने और उनसे टकरा जाने की चिन्ता हो रही थी; यदि हाँ, तो क्यों?

एक चित्र दिखाकर (जैसा कि आगे दिया गया है) चर्चा को आगे बढ़ाएँ और विद्यार्थियों से बुलबुले से सम्बन्धित उनके



अवलोकन/ अनुभव पूछें। इसके बाद सुरक्षा बुलबुला की कहानी सुनाएँ।

कहानी : सुरक्षा बुलबुला

आप सभी ने बुलबुले तो देखे ही होंगे। मेरा नाम *सुरक्षा बुलबुला* है और मैं आपको अपने बारे में बताऊँगा। मैं कोई साधारण बुलबुला नहीं हूँ; मैं एक विशेष बुलबुला हूँ। दुनिया में हर कोई मुझे अपने आसपास रखता है — आप, आपके माता-पिता, दोस्त, दादा-दादी, यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी (जैसा कि नीचे दिए गए चित्र में दिखाया गया है)। लेकिन मेरा ख़ास गुण यह है कि मैं दिखाई नहीं देता और मैं बिना दिखे ही अपना काम कर लेता हूँ।

अब आप सोच रहे होंगे कि क्या कोई बुलबुला भी काम करता है और वह भी एक सुरक्षा बुलबुला। तो मैं आपको बता दूँ कि मेरा काम भी मेरे ही नाम में ही छिपा है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि किसी सुरक्षा बुलबुले का क्या काम हो सकता है? (बच्चों को अनुमान लगाने और जवाब देने का मौक़ा दें।)

मेरा काम हर व्यक्ति का इस तरह से ध्यान रखना है कि कोई भी उसके शरीर के पास न आए या बिना अनुमति के उसे न छुए। मेरे सभी सुरक्षा बुलबुले मित्र, मेरी ही तरह, हमेशा ख़ुद को एक-दूसरे से दूर रखने की कोशिश करते हैं ताकि हम एक-दूसरे से टकरा न जाएँ। लेकिन कई बार लोग हमारे बारे में पूरी तरह से भूल जाते हैं और बिना अनुमति के एक-दूसरे के इतने क़रीब चले जाते हैं कि हम फूट जाते हैं। लोग इधर-उधर देखना भूल जाते हैं और खेलते समय अपने दोस्तों से टकरा जाते हैं, वे अपने दोस्तों को बुलाने के लिए उनके कपड़े खींचते हैं, उन्हें मारते हैं या बिना अनुमति के उनके सामान को छूते हैं। जब ऐसा होता है तो लोग अपने सुरक्षा बुलबुले में सहज महसूस नहीं करते हैं और उनकी दोस्तियाँ भी कमज़ोर पड़ जाती हैं। इसलिए मैं आज आपकी कक्षा/ समूह में आप सभी से मदद माँगने आया हूँ। क्या आप कुछ ऐसे तरीक़ों के बारे में सोच सकते हैं जिनसे आप अपने और अन्य लोगों के सुरक्षा बुलबुलों की रक्षा कर सकें? (बच्चों को अनुमान लगाने और जवाब देने का मौक़ा दें।)

चर्चा : कहानी सुनाने के बाद बच्चों के साथ निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करें :

- सुरक्षा बुलबुले का क्या कार्य है?
- ऐसे कौन-से कारण हैं जो आपके और अन्य लोगों के सुरक्षा बुलबुले को हानि पहुँचाने/ उसके फूटने का कारण बन सकते हैं?
- अपने और दूसरों के सुरक्षा बुलबुलों का ध्यान रखना क्यों ज़रूरी है?
- अगर कोई आपके सुरक्षा बुलबुले का ध्यान न रखे तो आपको कैसा लगेगा?
- आप अपने और अपने आसपास के लोगों के सुरक्षा बुलबुले का ध्यान कैसे रख सकते हैं?

एक बार फिर बच्चों को कक्षा/ खेल के मैदान में एक घेरे में दो मिनट के लिए 'मन मुताबिक़ चलने' के लिए कहें। लेकिन, इस बार उन्हें अपने और दूसरों के सुरक्षा बुलबुलों का ध्यान रखने के लिए प्रोत्साहित करें। अब विद्यार्थियों से पूछें कि कहानी के पहले और बाद 'अपने मन मुताबिक़ चलने' की गतिविधि के उनके अनुभवों में क्या अन्तर है और उनके अनुसार उन्हें यह अन्तर क्यों महसूस हुआ।

‘मन मुताबिक़ चलने’ और कहानी की गतिविधियों के ज़रिए बच्चों को इस नतीज़े पर पहुँचने में मदद करें कि हमें अपने आसपास के अदृश्य बुलबुलों का ख़्याल रखना चाहिए और हमेशा इन्हें बचाने की कोशिश करनी चाहिए। हमें बिना अनुमति के अन्य लोगों के सुरक्षा बुलबुले में प्रवेश नहीं करना चाहिए। इन गतिविधियों की सहायता से बच्चों का ध्यान इस ओर आकर्षित करें कि अगर किसी की अनुमति के बिना उन्हें छुआ जाए तो उन्हें अच्छा नहीं लगता है और इसलिए हमें हमेशा यह सोचना चाहिए कि हर किसी के चारों ओर एक अदृश्य बुलबुला है और हमें उसे नहीं फोड़ना चाहिए।

दूसरा दिन : खेल

अगले दिन बच्चों के साथ सुरक्षा बुलबुले की कहानी पर चर्चा करें। फिर एक खुली जगह में उनके साथ *साइमन कहता है* खेल खेलें। उन्हें खेल के नियम समझाएँ यानी उन्हें वही करना होगा जो ‘साइमन’ उन्हें करने के लिए कहे, लेकिन साथ ही उन्हें अपने और बाक़ी सभी के सुरक्षा बुलबुले का ध्यान भी रखना होगा।

इस खेल को 10 मिनट तक खेलें और फिर बच्चों को कक्षा में वापस लाएँ। इसे खेलने के उनके अनुभव पर चर्चा करें और पूछें कि यदि खेलते समय उनके पास सुरक्षा बुलबुला (आपस में दूरी) न हो तो क्या होगा। इसके बाद इस खेल के साथ रोल-प्ले की गतिविधि करें। अदिति और विवेक दो दोस्त हैं जो *साइमन कहता है* खेलते हैं। दो शिक्षक, अदिति और विवेक की भूमिका निभाते हैं और बच्चे देखते हैं।

अदिति : साइमन कहता है, ताली बजाओ।

(विवेक ताली बजाता है)

अदिति : साइमन कहता है, हाथ ऊपर करो।

(विवेक हाथ ऊपर करता है)

अदिति : अब तुम्हारी बारी।

विवेक : साइमन कहता है, बैठ जाओ।

(अदिति बैठ जाती है।)

विवेक : साइमन कहता है, अपने दोस्त की नाक पकड़ो।

(फिर वह हँसता है और अदिति की नाक छूता है। अदिति पीछे हट जाती है और चली जाती है)

विवेक : क्या हुआ अदिति?

अदिति : मैं नहीं खेलूँगी।

विवेक : लेकिन हुआ क्या?

अदिति : अपने हाथ अपने तक रखो! खेलते समय भी।

विवेक : अपने हाथ अपने तक? क्या मतलब?

अदिति : कल लंच ब्रेक के दौरान, रिंकी और मैं ‘खरगोश और बन्दर’ का खेल रहे थे। हमें ख़ूब मज़ा आ रहा था, लेकिन जब रिंकी ने कहा कि ‘बन्दरों को गुदगुदी करना अच्छा लगता है’ और उसने मुझे गुदगुदी की तो मुझे अच्छा नहीं लगा। मैं नहीं चाहती थी कि वह मुझे गुदगुदी करे। और बाद में क्लास में उसने मुझसे पूछे बिना मेरे हेयरबैण्ड को छुआ; मुझे यह भी अच्छा नहीं लगा। फिर बाहर रेत में खेलते समय भी उसने मुझसे बिना पूछे मेरे हाथ से मेरी बोतल का ढक्कन ले लिया। वह अपने हाथ अपने तक नहीं रखती और बार-बार बिना पूछे मेरे सुरक्षा बुलबुले में आ जाती है।

विवेक : ओह! फिर तुमने क्या किया?

अदिति : मैंने रिंकी से बात की और उससे कहा कि वह अपने हाथ अपने तक नहीं रखती और बिना पूछे मेरे सुरक्षा बुलबुले में आ जाती है। इससे मेरा बुलबुला फूटता है और मुझे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगता। मैंने उससे यह भी कहा कि बिना पूछे किसी को छूना या उनका सामान लेना अच्छी बात नहीं है। इससे उन्हें परेशानी हो सकती है। इसलिए ‘अपना हाथ अपने तक रखो’। हमें याद रखना चाहिए कि किसी को छूने से पहले हमें उनकी सहमति लेनी चाहिए और अगर वे मना करें तो हमें उन्हें नहीं छूना चाहिए।

विवेक : यह अच्छी बात है कि तुमने रिंकी से बात की। क्या रिंकी को यह बात समझ में आई?

अदिति : हाँ, उसने मुझसे कहा कि वह मुझे परेशान नहीं करना चाहती थी, वह तो सिर्फ़ खेल रही थी। उसने मुझसे वादा किया कि वह दूसरों को छूने या उनका सामान लेने से पहले हमेशा उनसे पूछेगी। उसने अपनी छोटी उँगली मेरी छोटी उँगली में फँसाकर ‘पिंकी प्रॉमिस’ किया, लेकिन ऐसा करने से पहले भी उसने मुझसे अनुमति ली और मैंने खुशी-खुशी ‘हामी’ भरी।

विवेक : अब मैं समझ गया कि ‘अपने हाथ अपने तक’ का क्या मतलब है। धन्यवाद, अदिति। क्या तुम मेरे साथ फिर से ‘साइमन कहता है’ खेलना चाहोगी?

अदिति : हाँ, क्यों नहीं। लेकिन अपने हाथ अपने तक।

विवेक : दोस्त न कहे तब तक।

अदिति : ध्यान रहे! देखो, बुलबुला न फूटे!

विवेक : दोस्त कोई न रूठे।

(अदिति और विवेक फिर से अपना पसन्दीदा खेल खेलना शुरू करते हैं।)

अदिति और विवेक के बीच हुई बातचीत पर बच्चों के साथ चर्चा करें। उनसे निम्नलिखित प्रश्न पूछें :

- खेल के बीच में अदिति ने विवेक के साथ खेलने से मना क्यों कर दिया?
- अदिति किस बात से परेशान हो गई थी?
- अगर आपका दोस्त आपसे पूछे बिना आपके सुरक्षा बुलबुले में आ जाए तो क्या होगा और आपको कैसा लगेगा?
- यदि ऐसा हो जाए तो आप अपने दोस्त को 'सहमति' का क्या सन्देश देंगे और कैसे?
- जैसे अदिति ने विवेक को 'अपने हाथ अपने तक' का नियम बताया, वैसे ही क्या आप अपनी कक्षा के लिए यह नियम बनाना चाहेंगे?

अदिति और विवेक की बातचीत पर चर्चा करके, बच्चों को इस निष्कर्ष पर पहुँचने में मदद करें कि हम सभी को अपने चारों ओर के सुरक्षा बुलबुले का ध्यान रखना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी हमसे पूछे बिना उसमें न आए। अगर कोई सहपाठी या दोस्त दूसरे के बुलबुले में क़दम रखे तो हम उन्हें इस नियम के बारे में शिष्टता से बता सकते हैं क्योंकि इसका पालन करने से हमारी दोस्ती भी मज़बूत बनी रहेगी।

आभार : लेखिका इस लेख में उल्लिखित गतिविधियों की रूपरेखा बनाने में मिली मदद के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा की विशेषज्ञों, लतिका और वंशिका दुआ के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हैं। लतिका आह्वान ट्रस्ट, नई दिल्ली में पाठ्यचर्या विकासकर्ता व शिक्षिका हैं और वंशिका दुआ उसी संगठन में पाठ्यचर्या विकासकर्ता और शिक्षक परामर्शदाता हैं।

Image Sources

https://images.agoramedia.com/wte3.0/gcms/Toddler-play-with-bubbles-722x406.jpg?width=574

https://i.ebayimg.com/images/g/X6EAAOSwrX1csGep/s-l500.png



शिल्पा बजाज अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में शिक्षा अध्ययन की पीएचडी स्कॉलर हैं। उन्होंने शिक्षा और समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। वे प्राकृतिकविज्ञान में विशेषज्ञता के साथ स्कूल शिक्षिका रह चुकी हैं। उन्होंने गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में बीएड कार्यक्रम भी पढ़ाया है। उनकी शोध और शिक्षण सम्बन्धी रुचियाँ यौनिकता और लैंगिकता; यौन शिक्षा; नारीवादी सिद्धान्त; समीक्षात्मक शिक्षणशास्त्र; शिक्षा का इतिहास, राजनीतिशास्त्र व समाजशास्त्र; नीति और पाठ्यक्रम अध्ययन विषयों में है। अपनी पीएचडी के लिए वे भारत के यौन शिक्षा कार्यक्रमों में यौनिकता और लैंगिकता की रचना का अध्ययन कर रही हैं। उनसे sbajaj2712@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल

खेल का एक मुख्य सिद्धान्त है साझा रूप से सीखना — प्रतिभागी, किसी पहेली को हल करने में, किसी कोड को समझने में या किसी भूलभुलैया से बाहर आने का रास्ता तलाशने में साथ मिलकर काम करते हैं। इस दौरान वे अपनी ग़लतियों या सफलताओं के साथ-साथ अपने साथियों से भी सीख रहे होते हैं। खेलों में इस प्रकार से सीखने के अवसर होने चाहिए और खेल के समाप्त होने के बाद इस सीख पर सोच-विचार करने का समय भी होना चाहिए।

*- **शाम्भवी नाइक**, विज्ञान की कक्षा के लिए खेल, पेज 82*